# काबा और कर्बला

हि० ८८२
११०४

माध्यमिक विद्यालय,
पुस्तकालय,
क्रम संख्या

श्रीमैथिलीशरण गुप्त

Scanned with OKEN Scanner

चतुर्थ संस्करण
२०१७ वि०

मूल्य
एक रुपया पच्चीस नये पैसे
रु० १.२५ नये पैसे

श्रीसुमित्रानन्दन गुप्त द्वारा
साहित्य मुद्रण, चिरगाँव ( झाँसी ) में मुद्रित।
तथा
साहित्य-सदन, चिरगाँव ( झाँसी ) से प्रकाशित।

Scanned with OKEN Scanner

# सूची


| | |
|---|---|
| अरब | १३ |
| काबा | १४ |
| सहधर्मिणी | १६ |
| गुरुजन | १७ |
| दासता | २० |
| प्रेय और श्रेय | २२ |
| दृढ़ता | २४ |
| हिजरत | २६ |
| मातृभक्ति | २९ |
| साक्षी | ३० |
| गर्व | ३१ |
| प्रमाण | ३३ |
| नमाज | ३४ |
| प्रतिशोध | ३५ |
| यहूदी | ३६ |
| स्वस्ति | ३७ |




Scanned with OKEN Scanner

# सूची

| | |
|---|---|
| अरब | १३ |
| काबा | १४ |
| सहधर्मिणी | १६ |
| गुरुजन | १७ |
| दासता | २० |
| प्रेय और श्रेय | २२ |
| दृढ़ता | २४ |
| हिजरत | २६ |
| मातृभक्ति | २९ |
| साक्षी | ३० |
| गर्व | ३१ |
| प्रमाण | ३३ |
| नमाज | ३४ |
| प्रतिशोध | ३५ |
| यहूदी | ३६ |
| स्वस्ति | ३७ |



Scanned with OKEN Scanner

| | |
|---|---|
| पाप की स्वीकृति | ३८ |
| नबी के निर्देश | ३९ |
| सफीया | ४१ |
| आयशा | ४२ |
| वरण | ४३ |
| अभियोग | ४४ |
| औदार्य | ४५ |
| पतिव्रता | ४८ |
| स्वदेश | ५० |
| सन्त-वाणी | ५१ |
| माँ-बेटी | ५२ |
| न्याय | ५३ |
| अकबर | ५९ |
| प्राप्ति | ६० |
| ताज | ६१ |
| कर्बला | ६५ |


—

# सफीया

आठवीं पत्नी नबी की मैं सफीया नाम की,
भाग्य मेरा, मैं हुई जो भागिनी उस धाम की।
स्नेह ही सबके सदृश पाया नहीं मैंने वहाँ,
लोक में औदार्य इतना सहज सम्भव था कहाँ!
प्रथम ही मैंने कही उनसे कथा यह मर्म की—
'देव यह दासी तुम्हारी है यहूदी धर्म की।'
मौन वे क्षण भर रहे सहसा किसी में लीन-से,
स्वस्थ होकर अन्त में बोले धनी इस दीन से।
"धर्म हैं सो धर्म हैं जो पन्थ हैं सो पन्थ हैं,
एक ने सबके लिए भेजे यहाँ निज ग्रन्थ हैं।
बस उसीके मन्त्र से चलते हमारे यन्त्र हैं।
स्वमत के सम्बन्ध में हम सब समान स्वतन्त्र हैं।"

## श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त लिखित काव्य—

| | | | |
|---|---|---|---|
| साकेत | ५) | गुरुकुल | ३) |
| यशोधरा | १॥) | द्वापर | ३) |
| सिद्धराज | १) | हिन्दू | २॥) |
| भारत-भारती | २) | जयद्रथ-वध | ।॥) |
| झंकार | १॥) | पत्रावली | ।=) |
| वक-संहार | ॥) | वन-वैभव | ॥) |
| सैरन्ध्री | ॥) | पञ्चवटी | ।॥) |
| अजित | १॥) | हिडिम्बा | ।॥) |
| तिलोत्तमा | १॥) | प्रदक्षिणा पाठ्य सं० | ॥=) |
| चन्द्रहास | १॥) | अनघ | १) |
| किसान | ॥) | शकुन्तला | ॥) |
| नहुष | ॥=) | विश्व-वेदना | ॥) |
| काबा और कर्बला | १) | कुणाल-गीत | १॥) |
| अर्जन और विसर्जन | ।=) | वैतालिक | ।=) |
| गुरु तेगबहादुर | ॥) | शक्ति | ।=) |
| रङ्ग में भङ्ग | ।=) | विकट-भट | ।) |
| पृथिवीपुत्र | ।॥) | अञ्जलि और अर्घ्य | ।॥) |
| जय भारत | ७॥) | युद्ध | ।॥) |
| राजा-प्रजा | ।॥) | विष्णुप्रिया | २॥) |

आपके अन्य ग्रन्थ और

*श्रीसियारामशरणजी गुप्त के सारे ग्रन्थ भी हमसे मँगाइए।*

प्रबन्धक—साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)